ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 354-356

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

सैदपुर तहसील में भूमि संसाधन एवं जनसंख्या समस्या

अतुल कुमार सिंह
असि0 प्रोफे0, भूगोल विभाग, पी0जी0 कालेज, गाजीपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: - atul_singh2011@yahoo.com

सारांश : ***मानव सभी भौगोलिक अध्ययनों का केन्द्र है। इसके सम्बन्ध में धरातल की विषमताओं, समस्याओं पदार्थों के साहचर्य एवं सम्बद्धता व्याख्या की जाती है। अतः मानव कल्याण हेतु उन समसयाओं का अध्ययन तथा उसके समाधान हेतु योजना प्रस्तुत करना आवश्यक हो जाता है। तहसील सैदपुर में कृषि मानव की अवश्यकता ही नहीं अपितु विकास का आधार स्तम्भ भी है।***

भौतिक समस्याओं के साथ–साथ तहसील की तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या भूमि उपयोग में अवस्था पारम्परिक कृषि पद्धति का अनुप्रयोग अशिक्षा तथा तकनीकी अज्ञानता आदि अध्ययन क्षेत्र के विकास में बाध क है। व्यवहारिक रूप में ग्रामीण नियोजन को विविध भूमि उपयोगों के लिए कृषि हेतु भूमि सर्वोत्तम उपयुक्तता कि निश्चय की एक प्रक्रिया माना जाता है। क्योंकि सीमित भूमि संसाधन पर दिनों–दिन बढ़ता जनसंख्या का भार न केवल साथ समस्या का जन्म देता है अपितु भावी पीढ़ी के लिए न्यूनतक विकसित जीव–स्वर व्यतीत करने को बाध्य करता है।

कुंजीभूत शब्द– धरातल, विषमताओं, साहचर्य, सम्बद्धता, मानव कल्याण, समस्याओं, समाधान, कृषि मानव, स्तम्भ।

जनसंख्या की विस्फोटक स्थिति के कारण खाद्य पदार्थों की मांग निरन्तर बढ़ रही है। तथा माँग एवं आपूर्ति कद दशा में वर्तमान असंतुलन जीवन स्तर को निम्न कर रहा है। जिसके 'फलस्वरूप मनुष्य को खाद्य पदार्थ वस्त्र, आवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी मैत्रिक आवश्यकता से वंचित रहना पड़ रहा है। वास्तविकता यह है कि यदि हमारा परिवार बड़ा होगा तो हमारी आवश्यकताएं भी अधिक होगी। बढ़ती महंगाई में जीवन–यापन कोई सरल कार्य नहीं है। समुचित लालन–पलन, पोषण और शिक्षाके अभाव में जनसंख्या की वह भावी पीढ़ी उत्पन्न हो रही है। जिसे भविष्य में विभिन्न जिम्मेदारियों को बोझ अपने कन्धों पर उठाना है। प्रत्येक शिशु को यह अधिकार कि वह पूर्णत स्वस्थ जन्मे, उनका स्वस्थ लालन–पालन हो एवं स्वस्थ वयस्क बने। विकासशील क्षेत्रों की जनसंख्या की गुणवत्ता लाने हेतु यहाँ शिशु एवं मातृत्व की आदर्श परिस्थितियां अत्यावश्यक है जो जनसंख्या समस्या के निवारण के बिना सम्भव है।

1 कृषि समस्या– तहसील की कृषि समस्याओं में प्रमुख रूप से भू–क्षरण की समस्या बहुत ही विकट समस्या है। कृषकों को खेती में वर्षा का न होना भी अत्यसन्त भयंकर समस्या है। साथ ही साथ मिट्टी की उर्वरता में कमी भी कृषि समस्या को बढा देती है।

कृषि भारती अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, क्योंकि यहाँ उद्योग धन्धे व्यवसाय आदि सब कुछ खेती पर ही निर्भर करता है। यदि खेती अच्छी नही होगी तो अनेक समस्याओं जैसे स्वास्थ्य, वस्त्र औषधियों सभी चीजों की कमी पड़ जायेगी। जो कि अकाल जैसी बड़ी समस्या को नियंत्रण देना होगा।

ग्रामीण विकास सम्पूर्ण जनसंख्या जो स्पष्टतः नगरीय क्षेत्र से बाहर रहती है। इसकलए समाजिक कल्याण एवं भौतिक पदार्थों में सुधार की प्रक्रिया है। ग्रामीण विकास प्रकृति से अन्तर्विषयक एवं क्रियान्वयन की दृष्टि से बहुखण्डीय है। जिसको अनेकानेक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु लागू किया जाता है। ऐसे उद्देश्य में अधिक उत्पादन रोजगार एवं आय का समान वितरण, विकास प्रक्रिया में जनता की भागीदारी आधुनिक निवेशों और सेवाओं की अधिकाधिक उपलब्धता आत्मनिर्भरता, पर्यावरण जागृति आदि प्रमुख हैं।

2. बाढ़ एवं जलभराव की समस्याः– प्राकृतिक प्रकोप के रूप में बाढ़ एवं जलभराव की समस्या निशिचित ही राष्ट्रीय भूमि उपयोग एवं कृषि विकास के परिवर्तन को अनुप्रेरित करती है। अध्ययन क्षेत्र में नदियों में अपने प्रवाह क्षेत्रों में बाढ़ का भीषण कुप्रभाव डाला है।

वर्षाकाल में नदियां अपने किनारों तथा तटबन्धों को तोड़कर निकटवर्ती क्षेत्रों को जलमग्न कर देती है। यही जलभराव तहसील के शुद्ध कृषि क्षेत्रों में कमी कभी सहायक बन जाती है। क्योंकि खरीफ फसलों के बोने के समय में ही मानसून का आगमन होता है। गली अपरदन ही अध्ययन क्षेत्र के शुद्ध कृषित भूमि के ऋणात्मक परिवर्तन को उत्प्रेरित

करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन हैं, क्योंकि जिस समय खरीफ की फसलों की बुआई होती रहती है। उसी समय जलभराव के कारण बुआई बाधित होती है। अध्ययन क्षेत्र में अनेक तालाब पाये जाते हैं जो अधिकांशतः ग्रीष्म ऋतु में शुष्क हो जाते हैं। परिणामतः यहाँ का एक विशाल भू–भाग ऐसा रह जाता है, जहाँ तक पारस्परिक और आधुनिक दोनों ही कृषि उपकरण नहीं पहुंच पाते हैं।

3. भू–क्षरण की समस्या– भू–भरण कृषि की विश्व व्यापी समस्या है। यह कृषि के विकास में बाधक है क्योंकि मृदा ही कृषि का प्रमुख आधार स्तम्भ है और मिट्टी का भू–क्षरण कृषि की महाविकराल समस्या को जन्म देता है। वास्तव में भू–क्षरण रेंगती हुई मृत्यु.........कहलाती है। भू–भरण को कृषि में क्षयरोग के नाम से जाना जाता है। तहसील सैदपुर में भू–क्षरण की भीषण समस्या है। यहाँ बड़ी नदियाँ नालों की अधिकता के कारण ऊपरी उर्वरा मिट्टी कटाव से ग्रस्त है।

4 अनावृष्टि की समस्या– मानसूनी वर्षा के वितरण की अनिश्चिता भारतीय कृषकों को प्रभावित करती है। अनियमित वर्षा कृषि को नष्ट करती है। अपितु देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर देती है। धान की फसल को यदि अधिक जल चाहिए, तो ज्वार बाजरा को कम पानी की आवश्यकता पड़ती है अनावृष्टि के वर्षा में पर्याप्त जल के अभाव में विविध फसलों का उत्पादन संकट में पड़ जाता है। सैदपुर के कृषक वर्षा न होने पर ट्यूबवेल, पम्पिंग सेट आदि साधनों से किसी तरह कृषि के कार्य करते हैं। प्राकृतिक वर्षा का न होना कृत्रिम साधनों के द्वारा खेती में सिंचाई कर पान बहुत ही साध्य कार्य है। यद्यपि सूखे की समस्या प्राकृतिक आपदा में से एक है, जिसका सम्पूर्ण निराकरण प्रायः असम्भव है। फिर भी सिंचाई के द्वारा सूखे के प्रभाव को कम किया ही जा सकता है।

5 मृदा उर्बरता में ह्रास की समस्या– कृषि पदार्थों में उत्पादनक प्रत्यक्ष रूप से मृदा की उर्वरता द्वारा प्रभावित होता है, क्योंकि मृदा की उच्च उर्वरता में अधिक उत्पादन तथा निम्न उर्वरता में कम उत्पादन होता है। अवैज्ञानिक ढ़ंग से लगातार फसलों के उत्पादन से मृदा उर्वरता शक्ति क्षीण होने लगती है। जिसका संरक्षण अति आवश्यक है। उर्वरता ह्रास के कारणों में प्रमुख कारण यह है कि लगाार एक ही फसल को नहीं बोना चाहिए। प्रत्येक वर्ष, रबी या खरीफ की जो भी फसल बोयी जाए जिससे खेती की उर्वरता फसल चक्र के नियम का पालन करने से बची रहे। मृदा उर्वरता में ह्रास का पमुख कारण कृषि व्यवस्था प्रबन्धन में कमी, वैज्ञानिक फसल चक्र (शस्यावर्तन) का पालन न करना, गोबर तथा हरी खाद के प्रयोग में कमी तथा रासायनिक उर्वरकि का अनवरत प्रयोग करना मुख्य है।

6. विकासजनित समस्या– तहसील सैदपुर में भूमि सुधार योजना के अर्न्तगत चकबन्दी, मेड़बन्दी, जोत सीमाबन्दी, मृदा परिक्षण एवं मृदा संरक्षण विभाग कार्यरत है। परन्तु सरकारी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उदासीनता निष्क्रियता स्वयं किसानों में जागरूकता की कमी आदि सम्मिलित प्रभाव से इन सुधारों का अपेक्षित सुपरिणाम नहीं मिल पा रहा है। कृषि के सवग्रीण विकास हेतु ग्रामीणांचलों में विद्युत कटौती तथा विद्युत लाइनों के अनुरक्षण में लापरवाही के कारण सभी कृषि उद्यम प्रभावित हो रहे हैं। विकास समस्याओं में एक प्रमुख समरूा तहसील के सभी गांव को सड़के नहीं होगी तो साधनों की कमी होगी और साधनों के न रहने पर कृषि स्पष्ट रूप से प्रभावित होगी। सामाजिक व प्रशासनिक कुरीतियों के कारण अध्ययन क्षेत्र में चल रही सभी विकास योजनाओं एवं उनकी कुव्यवस्था के कारण कृषि क्षेत्र में नितनवीन समस्या ने जन्म ले लिया है। जिनके समाधान से ही संतुलित एवं समन्वित कृषि विकास सम्भव हो पाता है।

7. भूमि का उपयोग सम्बन्धी समस्या–अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश किसान अशिक्षित एवं गरीब है। उनकी अशिक्षा गरीबी दक्षता के अभाव के कारण यहाँ भूमि का वैज्ञानिक अर्थात उचित उपयोग सम्भव नहीं हो पा रहा है। यहाँ बहुफसली क्षेत्र शस्य गहनता तथा सिंचित क्षेत्र का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। यहाँ के किसानों को यह भी तरीका नहीं पता कि कम भूमि में अधिक पैदावार कैसे प्राप्त किया जा सके। इसके अतिरिक्त किसानों को मिश्रित खेती का भी ज्ञान नहीं है। भूमि उपयोग के सम्बन्ध में यह बहुत बड़ी कमी इंगित करती है कि किसानों को यहाँ तक ज्ञात न हो कि कौन सी खेती ली जाए जो उनकी भूमि के अनुकूल अधिक फायदे की प्राप्ति करा सके। इस तहसील में बढ़ती जनसंख्या के विचार से आवश्यक है कि भूमि संसाधन का अधिकतम तथा अनुकूलतम उपयोग किया जाए ताकि–बहु–फसली क्षेत्र के साथ–साथ शस्य गहनता में वृद्धि हो सके। भूमि का कुप्रयोग तथा अल्प–प्रयोग की दशा में किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। अतः तहसील की स्थिति देखते हुए यह सुझाव दिया जा सकता है कि कृषकों को भमि के उपयोग के सम्बन्ध में सही व सटीक जानकारी देना बहुत ही आवश्यक है।

8. जनसंख्या समस्या– जनांकिकीय दृष्टिकोण से किसी भी देश (विकसित, विकासशील, अविसित) की तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या क्षेत्र हेतु कुछ परिस्थितियों में एक समस्या बन जाती है। किसी भी राष्ट्र में संसाधनों (प्राकृतिक) के सन्दर्भ में जनसंख्या के अधिकता एवं न्यूनता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

की परिस्थितियों जनसंख्या समस्या को जन्म देती है। वर्तमान परिस्थितियों में विशेषकर विकासशील एवं अल्प विकसित देशों में जनसंख्या अधिक्य वहाँ की प्रमुख समस्या बन चुका है। विश्व व्यापी जनसंख्या विस्फोट का सर्वाधिक भयावह रूप इन्हीं देशों में विद्यमान है।

यद्यपि जनसंख्या समस्या के अनेक पक्ष होते हैं। विकासशील प्रदेशों में जनसंख्या समस्या, जसंख्या एवं संसाधन (प्राकृतिक) के मध्य असंतुलन का परिमाण होता है, जो तीव्र जनसंख्या वृद्धि की उपज है। यदि जनसंख्या अधिाक और उपलब्ध संसाधन कम होते है तो जनाधिक्य समस्या की उत्पत्ति हो जाती है। इस प्रकार जनसंख्या जब भी अपने अनुकूलतम स्वरूप से हटकर होगी तो ''समस्या'' बन जायेगी। ''अनुकूलतम जनसंख्या संसाधनों और जनसंख्या के बीच सन्तुलन की दशा है जो किसी समाज के सभी सदस्यों की सुनिश्चित आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। तथा देशकाल व स्थान के सन्दर्भ में परिवर्तनशील है।'' (चान्दना आख्सी एवं सिद्धू एम0एस0 1980) जनसंख्या की विस्फोट स्थिति के कारण खाद्य पदार्थों की मांग निरन्तर बढ़ रही है तथा मांग एवं आपूर्ति की दशा में वर्तमान असन्तुलन जीवन स्तर का निम्न कर रहा है। जिसके फलस्वरू मनुष्य को खाद्य पदार्थ, आवास, एवं स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी आवश्यकताओं से वंचित सहना पड़ रहा है। वास्तविकता ये है कि यदि हमारा परिवार बड़ा होगा। हमारी आवश्कताएं भी अधिक होगी। बढ़ती महंगाई में जीवन यापन करना कोई सरल कार्य। समुचित लालन–पालन हो पोषण और शिक्षा के अभाव में यह भावी पीढ़ी उत्पन्न हो रही है जिसे भविष्य में विभिन्न जिम्मेदारियों का बोझ अपने बन्धों पर उठाना है। प्रत्येक शिशु को यह अधिकार है कि वह पूर्णतः स्वस्थ्य जन्में उनका स्वास्थ्य पालन पालन हो एवं वह स्वस्थ्य व्यस्क बने। विकासशील क्षेत्रों की जनसंख्या की गुणवत्ता में लाने हेतु यहाँ शिशु एवं मातृत्य की आदर्श परिस्थितियां अति आवश्यक है जो जनसंख्या समस्या के निवारण के बिना असम्भव है। सन् 1991 में तहसील सैदपुर की सम्पूर्ण जनसंख्या 426989 जो बढ़ 2001 में 523742 हो गयी अर्थात जनसंख्या प्रतिशत वृद्धि 22.56 प्रतिशत रही। 2011 में यह बढ़कर 642450 हो जायेगी यही वृद्धि दर रहा तो 2021 व 2031 में यह 787707 से बढ़कर 965807 हो जायेगी।

9. जनसंख्या दबाव एवं खाद्यपूर्ति की स्थिति– जनसंख्या दबाव का तात्पर्य किसी क्षेत्र की जनसंख्या एवं उपलब्ध संसाधनों का अनुपात है। इसे दूसरे शब्दों में ''मानव–भूमि अनुपात द्वारा'' भी व्यक्त किया जा सकता है। तहसील में जनसंख्या दबाव जो ग्रामीण संसाधनों मुख्यतः कृषि संसाधन पर निर्भर है। प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

सन् 2011 एवं 2021 ई0 में तहसील सैदपुर की जनसंख्या के लिए क्रमशः तथा हजार टन खाद्यान्न की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार दाल की आवश्यकता हजार टल तथा हजार टन होगी। हरी सब्जी, दूध मांस, गुड़ एवं चीनी फल आदि की अनुमानित आवश्यकता सारिणी 5.9 से देखी जा सकती है। अतः इस सारणी के आंकड़ो को देखने से स्पष्ट है कि तहसील सैदपुर में खाद्यान्न तथा दाल का उत्पादन आवश्यकता से अधिक रहा, किन्तु यही बात तिलहन सब्जी के लिए नहीं कही जा सकती क्योंकि उनका उत्पादन आवश्यकता से कम रहा।

10. भूमि उपयोग नियोजन– भूमि उपयोग नियोजन कई चरणों में सम्पन्न किया जा सकता है। जैसे उन्नतिशील बीजों का प्रयोग खाद, उर्वरकों का प्रयोग वैज्ञानिक फसल चक्र का मिश्रित तथा बहुउपयोग आदि द्वारा किया जाता है।

11. बाढ़ की समस्या का निदान– अध्ययन क्षेत्र में तालाबों की अधिकता मन्द ढ़ाल और मानसून ऋतु में अधिक से अधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जबकि भूमिगत जलस्तर है और कभी इस वर्ष शासन ने ट्यूबवेल के माध्यम से भूमिगत जल को सतह पर लाकर सिंचाई करने पर प्रतिबन्ध कर दिया था। जबकि अध्ययन क्षेत्र की सरिता मौसमी है। यदि उन पर लघु आकार के बाँध बना दिये जाये तो वाटर हार्वेस्टिंग भी हो सकता है।

12. भू–क्षरण की समस्या का निदान– भू–क्षरण की समस्या का निदान के लिए वृक्षों की कटाई पर प्रतिबन्धा लगाना होगा, क्योंकि निर्वनीकरण के कारण धरातल नग्न हो जाता है। जिस पर जल की बूंदे सीधा प्रहार करती है, और अवनलिकाओं की रचना हो जाती है। तो तीव्र भू–क्षरण होता है। इसके लिए वन विभाग में जागरण की आवश्यकता है। जिसमें निर्वनीकरण कम हो और वृक्ष अधिक लगाये जाए शासन स्तर पर नदियों, नालों, नहरों, सड़कों और रेलवे लाइनों के किनारे वन लगाये गये थे और उनकी सुरक्षा के लिए बबूल और आस्ट्रेलियाई बबूल लगाये गये थे। ग्रामीणांचलों में इसके प्रति जागरूकता न होने के कारण कुछ पौधे को गांव के निवासी उखाड़ ले गये और कुछ को अनियंत्रित चराई का शिकार होना पड़ा।

अन्य सुझाव :– अध्ययन क्षेत्र तहसील सैदपुर में भूमि संसाधन एवं संसाधन के रूप में अतिमहत्वपूर्ण कारक हैं जिसमें भूमि संसाधन को सुधारने का कार्य अति आवश्यक है क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में जीवन यापन करने का सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कारक है। वहाँ अधिकांश भूमि खराब पड़ी हुई है। इसको सुधारने का कार्य आवश्यक हो गया है।

*****